राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की सहभागिता

दीपक कुमार

शोधार्थी

स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग

तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

भूमिका :

भारत में महिलाओं की राजनीति में भागीदारी के वृद्धि के प्रयास स्वतंत्रता पूर्व, विभिन्न सुधार आंदोलनों, जिनमें परिवार में महिलाओं की स्थिति में सुधार, महिला अशिक्षा को दूर करने के प्रयास, विधवा विवाह पर निषेध को हटाने के प्रयास, बाल विवाह पर रोक के प्रयास आदि मुख्य हैं, के माध्यम से ही प्रारंभ हो चुके थे। यद्यपि सुधार आंदोलन प्रत्यक्ष रूप से महिलाओं की राजनीतिक में वृद्धि के प्रयास नहीं थे, लेकिन इनके प्रयासों से महिलाओं में चेतना का विकास निश्चित रूप से प्रारंभ हुआ इसके परिणामस्वरूप आगे चलकर महिलाओं को राजनीतिक सहभागिता का अवसर प्राप्त करने का आधार तैयार हुआ।

सामाजिक सुधार आंदोलन का एक महत्वपूर्ण प्रयास भक्ति आंदोलन रहा था। परन्तु भवित अंदोलन के कारण उनकी स्थिति में कुछ परिर्वतन आया, जिसके कारण महिलाओं को कुछ सामाजिक और धार्मिक स्वतंत्रता मिली। ब्रिटिश काल में महिलाओं की प्रस्थति में कुछ सुधार आया। पाश्चात्य संस्कृति, शिक्षा, विचारधारा आदि के सर्म्पक में आने से भारतीये नेताओं का मस्तिष्क गहरे रूप में प्रभावित हुआ। उसके परिणामस्वरूप भारत में तत्कालिक रूप से उपस्थित बुराईयों के विरूद्ध सुधार आंदोलन प्रारंभ हुए।[1] कुछ समाज सुधारकों एवं नेताओं द्वारा सामाजिक आंदोलनों को चलाने एवं ब्रिटिश सरकार द्वारा महिलाओं के हितों में बनाये गये कुछ अधिनियमों के कारण महिलाओं की स्थिति में सुधार की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। साथ ही कुछ सामाजिक संगठनों जैसे–बंग महिला समाज;' भारत महिला परिषद; (1904) इंडियन एसोसियेसन (1917); नेहानेल का उन्सिल फांर वीमेन इन इंडिया' (1925) एवं अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेंस (1927) आदि ने भी महिलाओं के उत्थान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन प्रयासों से राजनीतिक गतिविधियों में महिलाओं की सहभागिता प्रारंभ हुई। विभिन्न समाज सुधारकों द्वारा यह महसुस किया गया कि सामाजिक बुराईयों को जन–जागरूकता एवं लोगों को महिलाओं के प्रति होने वाले अन्याय के प्रति संवेदनशील बना कर दूर किया जा सकता है। विभिन्न समाज सुधारकों द्वारा स्थपित की गई संस्थाओं जैसे–आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, प्रार्थना समाज आदि ने अब सामाजिक सेवा, शैक्षणि, एवं सुधारात्मक गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं की स्थिति को उपर उठाने का प्रयास किया।

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाएँ :

वास्तव में स्वतंत्रता पूर्व महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता का प्रारंभ राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी के प्रयासों से संभव हुई। महात्मा गाँधी के नेतृत्व ने राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी के लिए महिलाओं को प्रोत्साहित किया। वे स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी के महत्व को अच्छी तरह से समझ चुके थे। उनका विचार से असससयोग आंदोलन में महिलाएँ पूरूषों की तुलना में अधिक लाभकारी है क्योंकि उनमें धार्मिकता की भावना तुलनात्मक रूप से अधिक होती है। चुपचाप शांत होकर के अपनी सेवा में आगे बढ़ती रहती है। जब वे सही मन से किसी काम करे करती वे पहाड़ों तक चढ़ सकती है।[2]

यद्यापि ब्रिटिश काल के शुरू के दौर में महिलाओं की राजनैतिक क्षेत्र में भागीदारी बहुत ही कम थी। महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन के समय से उनकी भागीदारी काफी बढ़ी क्योंकि उन्होंने महिलाओं की भागीदारी हेतु जोर–शोर से आह्वान किया। उन्होंने स्त्रियों को पर्दा से बाहर निकाल कर उनका सामाजिक आर्थिक–राजनैतिक रूपान्तरण किया।[3] 1921 ई0 के असहयोग आंदोलन एवं 1430 ई0 के नागरिक अवज्ञा आंदोलन एवं नई तकनीकि जैसे–विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, शराब दूकानों का बहिष्कार , सरकारी कार्यो में असहयोग आदि को अपनाया गया। महात्मा गाँधी को महिलाओं कि आंतरिक क्षमताओं एवं उनके नैतिक स्तर पर पूर्ण विश्वास था। कई अहिंसात्मक आंदोलनों में केवल उच्च जाति एवं वर्ग की महिलाओं बल्कि ग्रामीण एवं अशिक्षित महिलाओं ने भी नेतृत्त्व करने का कार्य किया। महिलाओं ने स्वंय को संगठित करने का कार्य किया तथा प्रदर्शनों में भाग लेने के साथ–साथ पुलिस की गोलियों का भी सामना किया और जेल भी गई। महाराष्ट्र की पंडिता रमाबाई आनन्दी बाई जोशी, रमाबाई रानाडे, दक्षिण की सरोजनी नायडू, उत्तर की विजया लक्ष्मी पंड़ित, अरूणा असफ अली, लक्ष्मी सहगल, कमला देवी चटटोयाध्याय आदि ने शुरू में स्त्रियों की शिक्षा, मातृत्व कल्याण, विधवा पुनविवाह, बाल–विवाह विरोध पर्दा प्रथा विरोध तक ही अपने को सीमित रखा था, किन्तु असहयोग आंदोलन के समय से वे स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय हो गई। सरोजनी नायुडू ने भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का अध्यक्ष पद भी प्राप्त किया।

कई विद्वानों, इंतिहासकारों एवं नारीवादियों यथा उमा, चक्रवर्ती एवं कुमकुम राय ने भारतीय इतिहास के लेखन में महिलाओं की भागीदारी को कम करके आँकने की बात कही है जबकि वास्तव में राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी 'संघर्ष के भीतर संघर्ष' था क्योंकि राष्ट्रीय आन्दोलन के साथी स्त्रियों ने अपनी मुक्ति का भी सवाल जोड़ दिया था जबकि महिलाएँ संगठक, नेता, संदेशवाहक आदि विभिन्न रूपों में कुशलता से काम कर रही थी।[4] 1917 ई0 में भारतीय महिलाओं का एक प्रतिनिधि स्त्रियों के मताधिकार की माँग के सम्बन्ध में मांटेग्य से मिला था तब अंग्रेज महिलाओं को भी यह आधिकार प्राप्त नहीं थे। उन्हें यह अधिकार 1928 ई0 में प्राप्त हुआ। अवध में भी राष्ट्रीय आंदोलन में काफी संख्या में महिलाएँ थी। फिर भी कई कांग्रेसी नेता उन्हें उचित सम्मान नहीं दे रहे थे। गाँधीजी ने 1940 ई0 में

स्वीकार किया था कि उन्होंने रचनात्मक कार्यक्रम में स्त्रियों की सेवाओं को जोड़ा था, यद्यापि सत्याग्रह में भागीदारी के द्वारा स्वाभाविक रूप से भारतीय स्त्रियाँ अंधकार से बाहर आयी। उतने थोड़े समय में और किसी अन्य माध्यम से यह संभव नहीं था। किन्तु कांग्रेस में पुरूष स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में स्त्रियों को समान स्तर पर नहीं देख पा रहे थे। अपने को स्वामी और लार्ड ही समझते थे। स्त्रियों को मित्र अथवा साथियों के रूप में स्वीकार नहीं करते थे। स्त्रियों को कानून तोड़ने की प्राक्रिया के लिए चुना जाता था। किन्तु कानून निर्माण की प्रक्रिया में स्थान नहीं दिया जाता। उल्लेखनीय है कि 1936–37 ई0 में कांग्रेस कार्यकारणी समिति में किसी महिला को सदस्य नहीं बनाया गया था। 1921 ई0 में गाँधीजी के सुझाव पर बम्बई में राष्ट्रीय सेविका संघ तथा देश सेविका संघ का गठन महिलाओं ने किया था जो विदेशी सामानों के बहिष्कार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहीं थी। महिला सेवा–दल का भी गठन किया गया था। जिसे जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस की कार्य करणी समिति के अधीन करना चाहते थे तथा कमला देवी चाट्टोपाध्याय को उसका प्रभारी बनाने का निश्चय लिया गया किन्तु कमला देवी चट्टोपाध्याय ने उस पर आपत्ति की तथा सरदार बल्लभ भाई पटेल के द्वारा कांग्रेस के हस्तक्षेप ने करने के आश्वासन पर ही संतुष्ट हुई। 1937 ई0 में जब प्रान्तीय स्वतत्रंता मिली तब सचिव उपाध्यक्ष एवं मंत्री नियुक्त हुई। किन्तु 1935 ई0 में स्त्रियों को मताधिकार उनकी शिक्षा, पति की परिस्थिति एवं सम्पति के आधार पर सीमित रूप से दिया गया तो निश्चित रूप से एकांगी एवं अपूर्ण थी।

स्वतंत्रता आंदोलन ने दो तरह–एक, अभिजात्य तथा दूसरा, सामान्य वर्ग की महिलाओं को एक साथ राजनीति के क्षेत्र में लाने का कार्य किया। उस आंदोलन में दोनों वर्ग की महिलाओं की भागीदारी साथ–साथ थी।[5] गाँधीजी ने राष्ट्रीय क्रियाकलापों विशेष रूप से रचनात्मक कार्यक्रमों एवं अहिंसक सत्याग्रह में भाग लेने के लिए महिलाओं को प्रोत्साहित किया क्योंकि उनके लिए राष्ट्रीय आंदोलन केवल एक राजनीतिक संघर्ष नहीं था बल्कि यह समाज के पुननिर्माण एवं पुनर्उत्थान का एक महत्वपूर्ण साधन था।[6] स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक समाज के सभी वर्गो की महिलाएँ राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग लेनी लगी। महिलाओं के राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी करने के परिणमस्वरूप उनमें अत्मविश्वास एवं आत्म सम्मान की वृद्धि हुई एवं उनके जीवन में सार्वजनिक तथा निजी जीवन के विभेद टूटने लगे।[7]

निष्कर्ष :

स्वतंत्र भारत में संवैधानिक व्यवस्था के तहत महिलाओं को प्रदत्त अधिकारों एवं महिला हितों के लिए बनाये गए विभिन्न अधिनियमों ने महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता के लिए कई मार्गों को एक साथ खोलने का काम किया। महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता का सम्बन्ध उनकी वास्तविक सामाजिक स्थिति से होता है। भारतीय समाज में ऐतिहासिक रूप से महिलाओं की सामाजिक परिस्थिति में समय–समय पर परिवर्त्तन होते रहे हैं उनकी स्थिति में परिवर्त्तन की घटनाएँ हमें वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक में दृष्टिगोचर होती है। हर काल एवं परिस्थिति के संदर्भ में महिलाओं की राजनीति

सहभागिता की स्थिति अलग–अलग देखा जा सकती है। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार की तीन दिशाएँ रहीं – प्रथम, सामाजिक सुधार हेतु, कई प्रयास किये गये, इनमें सुधार आंदोलन एवं राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी महत्त्वपूर्ण घटना रही हैं। दूसरे स्तर पर महिलाओं की के शिक्षा की स्थिति में सुधार हेतु उन्हें अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास हुआ। तीसरा प्रयास स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात संवैधानिक व्यवस्था के तहत महिला हितों में बना गये कई कानून हैं। राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी भी महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। वास्तव में स्वतंत्र भारत में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता की पृष्ठभूमि इसी आंदोलन में तैयार हुई।

संदर्भ :

1. एस0 एस0 माथुर एवं ए0 माथुर; सोसियो – साईकोलॉजिकल डायमेंसनस ऑफ वीमेन एडकेशन ज्ञान पालिशिंग हाऊस , नई दिल्ली , 2001. पृ0 – 25.
2. महात्मा गाँधी; दी हरिजन , 22 दिसम्बर, 1921.
3. सुभाष शर्मा; भारतीय महिलाएँ टशा एवं दिशा, शताब्दी प्रकाशन , पटना 2000 , पृ0 144.
4. कुमकुम सांगरी एवं सुदेश वैद, रिकास्टिंग वीमेन : एसेज इन कॉलोनियल हिस्ट्री; सं0 काली और वीमेन, नई दिल्ली , 1998 पृ0 201.
5. हेमलता स्वरूप; इथनिसिटी, जेडंर एण्ड क्लास, इन्टर नेशनल कांफ्रेस ऑफ हिस्टोरियनस ऑफ दी लेवर मुवमेंट , यूरोपा वरलैग, वियाना , 1993, पृ0 – 367.
6. एस0 आर0 बख्शी; एडवांसड हिस्ट्री ऑफ मार्डन इंडिया (सं0) खं0 3–4, अनमोल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 1995, पृ0. 226.
7. हेमलता स्वरूप; पूर्वोल्लिखित; पृ0. 367.